मशरूम उत्पादन बना आय का सशक्त माध्यम

संजीव कुमार[1], चन्द्रशेखर आजाद[2] और **राकेश कुमार[3]**

“ बिहार के बांका जिले का ग्रामीण समाज मुख्यत: कृषि पर आधारित है, जहां सीमित भूमि संसाधन, पारंपरिक खेती और बाजार की अनिश्चितताओं के कारण अनेक परिवार आर्थिक चुनौतियों का सामना करते हैं। ऐसी परिस्थितियों में श्रीमती बिनीता कुमारी ने साहस, नवाचार और दृढ़ इच्छाशक्ति के बल पर मशरूम उत्पादन को आजीविका का सशक्त माध्यम बनाया। आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद इन्होंने वैज्ञानिक प्रशिक्षण प्राप्त कर आधुनिक तकनीकों को अपनाया और एक सफल कृषि आधारित उद्यम स्थापित किया। आज बिनीता न केवल अपने परिवार की आय बढ़ाने में सफल हुई हैं, बल्कि ग्रामीण महिलाओं के लिए आत्मनिर्भरता, उद्यमिता और महिला सशक्तिकरण की प्रेरणादायक मिसाल भी बन चुकी हैं। ”

मशरूम उत्पादन वर्तमान समय में कृषि आधारित एक ऐसे लाभकारी एवं टिकाऊ उद्यम के रूप में उभर रहा है, जो कम भूमि, सीमित संसाधनों और न्यूनतम प्रारंभिक निवेश में बेहतर आय प्रदान करने की क्षमता रखता है। पोषण की दृष्टि से समृद्ध होने के साथ-साथ इसकी बाजार मांग भी लगातार बढ़ रही है, जिसके कारण यह ग्रामीण युवाओं और महिलाओं के लिए स्वरोजगार का प्रभावी माध्यम बनता जा रहा है।

विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में मशरूम उत्पादन ने महिलाओं की आर्थिक भागीदारी और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बिहार के बांका जिले की श्रीमती बिनीता कुमारी इसकी एक प्रेरणादायक उदाहरण हैं, जिन्होंने वैज्ञानिक तकनीकों और दृढ़ संकल्प के बल पर मशरूम उत्पादन को सफल कृषि उद्यम में परिवर्तित कर अपनी अलग पहचान स्थापित की।

श्रीमती बिनिता जी के परिवार की आजीविका मुख्यत: पारंपरिक कृषि पर

[1]सहायक प्राध्यापक; [2]संबद्ध प्राध्यापक, पादप रोग विज्ञान, बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर-813 210 (बिहार); [3]वरिष्ठ वैज्ञानिक, सस्य विज्ञान, भाकृअनुप पूर्वी क्षेत्र, पटना (बिहार)

आधारित थी, जहां सीमित संसाधनों के बीच दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना निरंतर संघर्षपूर्ण था। बचपन से ही बिनीता जी ने विपरीत परिस्थितियों में धैर्य, संयम और दृढ़ संकल्प के साथ जीवन जीना सीखा। ग्रामीण समाज की पारंपरिक व्यवस्था में जहां अधिकांश महिलाएं कृषि कार्यों तक सीमित भूमिका निभाती थीं, वहीं श्रीमती बिनीता जी ने प्रारंभिक अवस्था से ही आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता और निर्णय लेने की योग्यता विकसित कर स्वयं को इस सीमित दायरे से आगे बढ़ाने का संकल्प लिया।

प्रारंभिक उत्पादन और नवाचार

बिनीता कुमारी जी ने मशरूम उत्पादन की अपनी उद्यमशील यात्रा अत्यंत सीमित संसाधनों के बीच प्रारंभ की। शुरुआती चरण में इन्होंने कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके), बांका से उच्च गुणवत्ता वाला स्पॉन प्राप्त किया और अपने घर के एक छोटे से कमरे में मात्र 25 बैग तैयार कर उत्पादन कार्य आरंभ किया। उत्पादन लागत को न्यूनतम रखने तथा बेहतर उपज प्राप्त करने के उद्देश्य से इन्होंने धान के बीज को आधार सामग्री के रूप में अपनाया, जो पारंपरिक विधियों की तुलना में अधिक किफायती और प्रभावी सिद्ध हुआ।

इसके अतिरिक्त श्रीमती बिनीता जी ने गन्ने की पत्तियों, मक्का भूसे तथा धान के अवशेषों जैसे स्थानीय एवं कम लागत वाले कृषि उप उत्पादों का उपयोग कर उत्पादन दक्षता बढ़ाने के कई नवाचारी प्रयास किए। इन प्रयोगों के परिणामस्वरूप न केवल उत्पादन क्षमता में काफी वृद्धि हुई, बल्कि मशरूम की गुणवत्ता में भी सुधार आया।

वैज्ञानिक विधि से उत्पादन पर रहा जोर

समय के साथ इन्होंने बटन, ऑयस्टर, मिल्की तथा शिटाके जैसी विभिन्न मशरूम प्रजातियों का उत्पादन प्रारंभ किया, जिससे बाजार की अनिश्चितताओं से उत्पन्न जोखिम को कम करने में इन्हें विशेष लाभ मिला। उत्पादन में विविधता लाने की उनकी रणनीति ने उनकी आय को स्थिरता प्रदान की तथा उपभोक्ताओं तक गुणवत्तापूर्ण उत्पाद पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इसके साथ ही इन्होंने स्पॉन की गुणवत्ता पर भी विशेष ध्यान केंद्रित किया। उच्च गुणवत्ता वाले स्पॉन के उपयोग से जहां उनके स्वयं के उत्पादन की गुणवत्ता बेहतर हुई, वहीं उन्होंने स्थानीय महिलाओं एवं किसानों को भी सस्ते और गुणवत्तायुक्त स्पॉन उपलब्ध करवाना सुनिश्चित किया। इससे न केवल क्षेत्र में मशरूम उत्पादन को बढ़ावा मिला, बल्कि अनेक ग्रामीण परिवारों को आत्मनिर्भर बनने का अवसर भी प्राप्त हुआ।

प्रभाव

श्रीमती बिनीता जी का 'ट्रेन-एंड-एम्पावर' मॉडल ग्रामीण महिला सशक्तिकरण का एक प्रभावी उदाहरण बनकर उभरा है। इनके मार्गदर्शन एवं तकनीकी सहयोग से झिरवा, छूतिया, अमरपुर, शीतलपुर और खेडुरैदिह सहित आसपास के क्षेत्रों की लगभग 300 महिलाएं मशरूम उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन गतिविधियों से जुड़कर नियमित आय अर्जित कर रही हैं।

बिनीता जी प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाओं को मशरूम उत्पादन की वैज्ञानिक तकनीकों, गुणवत्ता प्रबंधन, पैकेजिंग, मूल्य निर्धारण तथा विपणन से संबंधित व्यावहारिक जानकारी प्रदान करती हैं। उनके मार्गदर्शन का परिणाम यह रहा कि अनेक महिलाएं सफल सूक्ष्म उद्यमी के रूप में उभरकर आर्थिक आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ी हैं। इनका यह मॉडल अब कृषि विश्वविद्यालयों एवं अन्य

प्रशिक्षण से विकास

बिनीता जी ने अपने उद्यम को सफल बनाने के लिए कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके), बांका से मशरूम उत्पादन एवं स्पॉन निर्माण का प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण के दौरान इन्हें बटन, ऑयस्टर, मिल्की और शिटाके जैसी विभिन्न मशरूम प्रजातियों की उत्पादन तकनीकों, तापमान एवं आर्द्रता प्रबंधन, स्वच्छ उत्पादन प्रक्रिया तथा बाजार की मांग के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। बाद में आत्मा, बांका के सहयोग से इन्होंने उन्नत स्पॉन निर्माण तकनीक एवं संबंधित उपकरणों के उपयोग का भी प्रशिक्षण प्राप्त किया। इससे इन्हें व्यवस्थित उत्पादन, लागत नियंत्रण तथा निरंतर लाभ सुनिश्चित करने की दक्षता प्राप्त होने लगी। बिनीता जी ने अपने क्षेत्र की सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों का गहन अवलोकन करते हुए यह महसूस किया कि अधिकांश ग्रामीण महिलाएं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने के पर्याप्त अवसरों से वंचित हैं। इस स्थिति ने इन्हें गहराई से प्रभावित किया। इन्होंने न केवल स्वयं विशेषज्ञ प्रशिक्षण प्राप्त किया, बल्कि अपने अर्जित अनुभव, तकनीकी ज्ञान और व्यावहारिक कौशल को अन्य महिलाओं तक पहुंचाने को भी अपना उद्देश्य बना लिया। उनकी यह दूरदृष्टि इनके उद्यम को केवल व्यक्तिगत उपलब्धि तक सीमित रखने के बजाय व्यापक सामुदायिक परिवर्तन का माध्यम बना गई। परिणामस्वरूप उन्होंने स्थानीय महिलाओं को स्वरोजगार, आत्मनिर्भरता और उद्यमिता की दिशा में प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

संस्थानों द्वारा प्रशिक्षण मॉड्यूल के रूप में भी अपनाया जा रहा है।

राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर प्राप्त मान्यता

श्रीमती बिनीता जी के सतत नवाचार, तकनीकी दक्षता तथा ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के काफी प्रयासों ने उन्हें स्थानीय स्तर से राष्ट्रीय स्तर तक विशिष्ट पहचान दिलाई है। इनके कार्य न केवल कृषि आधारित उद्यमिता को नई दिशा प्रदान करते हैं, बल्कि महिला सशक्तिकरण के प्रभावी मॉडल के रूप में भी स्थापित हुए हैं। इनके बहुआयामी योगदान के लिए उन्हें विभिन्न प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है:

- **जगजीवन राम अभिनव किसान नवाचार पुरस्कार (वर्ष 2018):** कृषि नवाचार, उन्नत उत्पादन तकनीकों के प्रसार तथा किसानों एवं महिलाओं को प्रशिक्षण प्रदान करने में उत्कृष्ट योगदान हेतु।
- **इनोवेटिव फार्मर अवार्ड (वर्ष 2021):** नवाचार आधारित कृषि उद्यमिता एवं सफल मशरूम उत्पादन मॉडल विकसित करने के लिए।
- **प्रोग्रेसिव मशरूम ग्रोवर अवार्ड (2023):** मशरूम उत्पादन, गुणवत्ता सुधार, मूल्य संवर्धन तथा ग्रामीण महिलाओं को उद्यमिता से जोड़ने में काफी उपलब्धियों के लिए।

उन्नत तकनीक से स्वस्थ उत्पादन

संभावनाओं से भरपूर है मशरूम उत्पादन

सारणी: उत्पादन और वार्षिक आय का विस्तृत विवरण

आय का स्रोत	वार्षिक उत्पादन	मूल्य (रुपये)	वार्षिक आय (रुपये)
मशरूम स्पॉन बिक्री	18-22 टन	60-80 प्रति कि. ग्रा.	1,50,000-1,80,000
ताजा मशरूम बिक्री	12-15 क्विंटल	130-180 प्रति कि.ग्रा.	1,20,000-1,50,000
मूल्य संवर्धित उत्पाद	-	-	20,000-35,000
प्रशिक्षण एवं परामर्श सेवाएं	6-8 बैच/वर्ष	3,000-6,000 प्रति बैच	20,000-40,000
कुल वार्षिक आय			2,50,000-3,00,000

- **प्रखण्ड उद्यमी सम्मान (वर्ष 2025):** बिहार सरकार द्वारा ग्रामीण स्तर पर सफल उद्यमिता एवं महिला सशक्तिकरण में योगदान हेतु।
- **नवोन्मेषी किसान सम्मान (वर्ष 2025):** कृषि क्षेत्र में नवाचार एवं टिकाऊ स्वरोजगार मॉडल विकसित करने के लिए।

भावी योजनाएं

श्रीमती बिनीता कुमारी वर्तमान में मशरूम आधारित मूल्य संवर्धित उत्पादों, जैसे मशरूम पाउडर, अचार, पापड़ और सूप मिक्स के विकास पर कार्य कर रही हैं। इनका उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं के लिए स्थायी रोजगार एवं अतिरिक्त आय के अवसर सृजित करना है।

इसके अतिरिक्त इन्होंने झिरवा गांव में एक पूर्ण विकसित मशरूम स्पॉन लैब एवं प्रशिक्षण हब स्थापित करने की योजना बनाई है। यह केंद्र उत्पादन, प्रशिक्षण, पैकेजिंग तथा विपणन की समेकित सुविधाएं उपलब्ध करवाएगा। इससे न केवल आसपास के गांवों में गुणवत्तायुक्त स्पॉन की उपलब्धता सुनिश्चित होगी, बल्कि स्थानीय महिलाओं और युवाओं को रोजगार एवं व्यावसायिक कौशल विकास के नए अवसर भी प्राप्त होंगे।

श्रीमती बिनीता जी का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत आर्थिक सफलता प्राप्त करना नहीं है, बल्कि मशरूम उत्पादन को ग्रामीण क्षेत्रों में एक टिकाऊ, लाभकारी और रोजगारपरक कृषि आधारित उद्यम के रूप में स्थापित करना है।

श्रीमती बिनीता कुमारी की सफलता गाथा यह सिद्ध करती है कि दृढ़ संकल्प, वैज्ञानिक प्रशिक्षण और नवाचार के माध्यम से ग्रामीण महिलाएं आर्थिक एवं सामाजिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकती हैं। उनके प्रयासों ने न केवल उनके परिवार की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ किया, बल्कि पूरे क्षेत्र की महिलाओं के लिए नए अवसरों और संभावनाओं के द्वार भी खोले हैं। इनका मॉडल ग्रामीण उद्यमिता, महिला सशक्तिकरण और सामुदायिक विकास का एक प्रेरणादायक उदाहरण है, जो अन्य महिलाओं को भी आत्मनिर्भरता और नवाचार की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता रहेगा। ■